अध्याय 4 — एक नए चेहरे का आगमन

कॉलेज के प्रांगण में विद्यार्थियों की चहल-पहल थी।

कहीं भविष्य की योजनाओं पर चर्चा हो रही थी, तो कहीं विद्यार्थी अपनी पढ़ाई को लेकर चिंतित थे। कुछ विद्यार्थी ऐसे भी थे, जिनके लिए कॉलेज आने का सबसे बड़ा कारण अपने मित्रों से मिलना था।

आरव, वीर, ईशा और काव्या भी कॉलेज के एक पेड़ के नीचे बैठे हुए थे।

लेकिन आज आरव असामान्य रूप से शांत था।

वीर पिछले कुछ समय से उसे देख रहा था।

“भाई, आज शरीर ही कॉलेज आया है या मन भी साथ लाए हो?”

ईशा हँसने लगी, लेकिन आरव ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।

काव्या ने आरव की ओर देखा।

“क्या हुआ? दादाजी ठीक हैं?”

“हाँ, बिल्कुल ठीक हैं।”

“फिर क्या बात है?”

“कुछ नहीं, बस ऐसे ही कुछ सोच रहा था।”

वीर ने तुरंत कहा—

“अधिक मत सोचा करो। पहले ही पढ़ाई में हमसे आगे हो। अब वैज्ञानिक बनने का विचार है क्या?”

इस बार आरव भी मुस्कुरा दिया।

ईशा ने कहा—

“चलो, आखिरकार महाराज के चेहरे पर मुस्कान तो आई।”

चारों हँसने लगे।

अपने मित्रों के साथ बैठकर आरव कुछ समय के लिए अपनी चिंताओं को भूल गया।

प्रेम का अर्थ

कुछ देर बाद वीर और ईशा कुछ खाने के लिए कैंटीन की ओर चले गए।

आरव और काव्या वहीं बैठे रहे।

काव्या ने आरव का हाथ पकड़कर पूछा—

“तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो?”

आरव ने उसकी ओर देखा।

“तुम्हें ऐसा क्यों लगा?”

“क्योंकि तुम्हारी मुस्कान और तुम्हारी आँखें आज अलग-अलग बातें कह रही हैं।”

आरव कुछ क्षण शांत रहा।

“काव्या, यदि किसी दिन तुम्हें पता चले कि मैं वैसा नहीं हूँ, जैसा तुम मुझे समझती हो, तो?”

काव्या ने मुस्कुराते हुए पूछा—

“तो वास्तव में कैसे हो?”

“मान लो कि मेरे जीवन में कुछ ऐसा है, जिसे मैं स्वयं भी नहीं समझता।”

काव्या कुछ देर उसकी ओर देखती रही।

फिर बोली—

“आरव, मैंने तुमसे प्रेम इसलिए नहीं किया कि मैं तुम्हारे विषय में सब कुछ जानती हूँ। मैंने तुमसे प्रेम इसलिए किया क्योंकि तुम्हारे साथ मुझे अपना वास्तविक स्वरूप छिपाना नहीं पड़ता।”

आरव उसकी बातें ध्यान से सुन रहा था।

“तुम्हारे जीवन में क्या है और क्या नहीं है, इससे अधिक महत्वपूर्ण मेरे लिए यह है कि तुम्हारे जीवन में मेरा क्या स्थान है।”

आरव के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

“इतनी अच्छी बातें करना कहाँ से सीखा?”

काव्या ने हँसकर कहा—

“तुम्हारे साथ रहते-रहते थोड़ी समझदार हो गई हूँ।”

“थोड़ी?”

“अधिक प्रसन्न मत हो।”

दोनों हँसने लगे।

कुछ क्षणों के लिए आरव को लगा कि उसके जीवन में चाहे कितने भी अनुत्तरित प्रश्न हों, कुछ संबंध ऐसे हैं, जिनके लिए किसी उत्तर की आवश्यकता नहीं होती।

एक विशेष आगमन

तभी कॉलेज के मुख्य द्वार की ओर से अचानक शोर सुनाई देने लगा।

एक के बाद एक तीन महँगी कारें कॉलेज परिसर में प्रवेश कर रही थीं।

अनेक विद्यार्थी अपनी जगह से उठकर उन्हें देखने लगे।

बीच वाली कार मुख्य भवन के सामने आकर रुकी।

उसका द्वार खुला और उसमें से एक युवक बाहर निकला।

आकर्षक व्यक्तित्व, अत्यंत महँगे वस्त्र और चेहरे पर आत्मविश्वास।

लेकिन उसके आत्मविश्वास में कहीं न कहीं अपने धन और प्रभाव का अहंकार भी था।

उसका नाम युवराज था।

वह समाज के उन गिने-चुने A-Class परिवारों में से एक परिवार का सदस्य था,
जिनके लिए संसार की अधिकांश सुविधाएँ सहज उपलब्ध थीं।

कॉलेज का एक अधिकारी स्वयं उसका स्वागत करने के लिए बाहर आया।

“युवराज जी, हमारे कॉलेज में आपका स्वागत है।”

युवराज ने आसपास देखा।

“यही है आपका कॉलेज?”

“जी, यह शहर के सबसे प्रतिष्ठित कॉलेजों में से एक है।”

युवराज ने हल्की मुस्कान के साथ कहा—

“देखते हैं।”

वह अधिकारी के साथ मुख्य भवन की ओर बढ़ गया।

विद्यार्थियों के बीच उसके विषय में चर्चा प्रारंभ हो गई।

कोई उसकी कार की कीमत का अनुमान लगा रहा था, तो कोई उसके परिवार के विषय में जानकारी खोज रहा था।

कुछ विद्यार्थी अभी से उससे मित्रता करने के अवसर तलाशने लगे थे।

वीर और ईशा भी कैंटीन से वापस आ चुके थे।

वीर ने कारों की ओर देखते हुए कहा—

“लगता है कोई बहुत बड़ा व्यक्ति आया है।”

ईशा ने कहा—

“व्यक्ति आया है या उसका धन आया है?”

वीर हँसने लगा।

आरव ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा—

“जो भी आया हो, हमारी कक्षा का समय हो गया है। चलो।”

चारों मुख्य भवन की ओर बढ़ गए।

युवराज की दृष्टि

कुछ समय बाद युवराज कक्षा में पहुँचा।

अध्यापक ने सभी विद्यार्थियों से उसका परिचय करवाया।

युवराज ने पूरी कक्षा पर एक दृष्टि डाली।

तभी उसकी दृष्टि काव्या पर जाकर रुक गई।

काव्या अपनी पुस्तक में कुछ लिख रही थी। उसने युवराज की ओर ध्यान तक नहीं दिया।

युवराज कुछ क्षण उसे देखता रहा।

शायद उसे काव्या की सुंदरता से अधिक आश्चर्य इस बात का था कि जहाँ लगभग पूरी कक्षा उसकी ओर देख रही थी, वहीं काव्या को उसके आगमन से कोई अंतर नहीं पड़ा था।

वह काव्या के पास जाकर बैठना चाहता था।

लेकिन उसके बगल वाली कुर्सी पर आरव बैठा था।

युवराज वहाँ पहुँचा और आरव से बोला—

“तुम वहाँ बैठ जाओ। मुझे यहाँ बैठना है।”

आरव ने सामने की खाली कुर्सी की ओर संकेत किया।

“वहाँ स्थान खाली है। तुम वहाँ बैठ सकते हो।”

युवराज को ऐसे उत्तर की अपेक्षा नहीं थी।

“शायद तुमने मेरी बात ध्यान से नहीं सुनी। मैंने कहा, मुझे यहाँ बैठना है।”

आरव ने शांत स्वर में उत्तर दिया—

“मैंने तुम्हारी बात सुनी है, लेकिन मैं पहले से यहाँ बैठा हूँ।”

युवराज ने अपना स्वर कठोर करते हुए पूछा—

“तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?”

आरव अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया।

“अभी-अभी तो अध्यापक ने परिचय करवाया है। युवराज नाम है तुम्हारा।”

कक्षा में बैठे कुछ विद्यार्थी धीमे स्वर में हँसने लगे।

युवराज का चेहरा क्रोध से भरने लगा।

वह आरव के और निकट आ गया।

अब दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े थे।

कक्षा में अचानक शांति छा गई।

वीर भी अपनी कुर्सी से उठने लगा।

अध्यापक कुछ कहते, उससे पहले ही काव्या ने अपनी पुस्तक बंद की और खड़ी होकर कहा—

“ठीक है, आपको यहाँ बैठना है न? आप यहीं बैठ जाइए।”

युवराज के चेहरे पर विजयी मुस्कान आ गई।

उसे लगा कि आखिरकार उसकी बात मान ली गई।

लेकिन अगले ही क्षण काव्या ने अपनी पुस्तकें उठाईं, आरव का हाथ पकड़ा और कहा —

“चलो आरव, हम वहाँ बैठ जाते हैं।”

दोनों दूसरी ओर रखी खाली कुर्सियों पर जाकर बैठ गए।

युवराज की मुस्कान गायब हो गई।

जिस कुर्सी को प्राप्त करने के लिए उसने इतना विवाद किया था, अब उसके पास वह कुर्सी तो थी, लेकिन काव्या नहीं।

कक्षा के कुछ विद्यार्थी एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराने लगे।

युवराज ने अपनी उँगलियाँ कसकर बंद कीं।

उसकी मुट्ठी तन गई।

उसने क्रोध में अपनी मुट्ठी मेज पर दे मारी।

मेज पर रखी पुस्तकें हिल गईं।

उसने आरव की ओर देखते हुए धीमे स्वर में कहा—

“देख लूँगा तुम्हें।”

दूसरी ओर काव्या अपनी पुस्तक खोलते हुए आरव से बोली—

“एक कुर्सी के लिए इतना विवाद करने की क्या आवश्यकता थी?”

आरव मुस्कुराया।

“विवाद कुर्सी के लिए नहीं था, काव्या। बात करने के तरीके के लिए था।”

काव्या ने मुस्कुराकर कहा—

“तो अब पढ़ाई करें, महाशय?”

आरव हँसने लगा।

अध्यापक ने सभी विद्यार्थियों को शांत रहने का निर्देश दिया और पढ़ाना प्रारंभ कर दिया।

आरव और काव्या के लिए वह घटना वहीं समाप्त हो गई थी।

लेकिन युवराज के लिए यह केवल शुरुआत थी।

पूरी कक्षा के समय युवराज का ध्यान पढ़ाई से अधिक आरव और काव्या की ओर था।

उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके सामने एक साधारण परिवार का युवक इतनी सहजता से खड़ा कैसे हो गया।

उसके जीवन में अधिकांश लोग उसके परिवार का नाम सुनते ही अपना व्यवहार बदल लेते थे।

लेकिन आरव के व्यवहार में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं आया था।

यह बात युवराज को भीतर ही भीतर परेशान कर रही थी।

मित्रता या कोई योजना?

दोपहर में चारों मित्र कैंटीन में बैठे थे।

वीर अपनी थाली की ओर देखते हुए ईशा से बोला—

“तुमने कहा था कि तुम्हें भूख नहीं है।”

“हाँ, तो?”

“तो मेरी आधी थाली खाली कैसे हो गई?”

ईशा ने सहजता से उत्तर दिया—

“मित्रता में इतनी गणना नहीं करते।”

काव्या और आरव हँसने लगे।

कुछ दूरी पर खड़ा युवराज उन चारों को देख रहा था।

सुबह कक्षा में हुई घटना अभी भी उसके मन में थी।

लेकिन इस बार वह क्रोध दिखाने के स्थान पर कुछ और सोच रहा था।

उसे समझ आ गया था कि यदि उसे काव्या के निकट पहुँचना है, तो पहले उसके मित्रों के बीच अपना स्थान बनाना होगा।

उसने अपने चेहरे पर मुस्कान लाई और उनकी मेज के पास पहुँचा।

“क्या मैं भी आप लोगों के साथ बैठ सकता हूँ?”

चारों ने उसकी ओर देखा।

वीर ने पास रखी खाली कुर्सी आगे कर दी।

“बिल्कुल, बैठो।”

युवराज बैठ गया।

उसने मेज पर रखे भोजन को देखकर पूछा—

“तुम लोग प्रतिदिन यहीं भोजन करते हो?”

ईशा ने कहा—

“हाँ, क्यों? तुम्हें यहाँ का भोजन पसंद नहीं आया?”

“वास्तव में मैंने कभी ऐसे स्थान पर भोजन नहीं किया। मेरे घर पर भोजन बनाने के लिए अलग-अलग रसोइये हैं।”

वीर ने हँसते हुए कहा—

“तो आज हमारे साथ भोजन करके एक नया अनुभव प्राप्त कर लो।”

युवराज ने आसपास देखा।

“तुम लोग बाहर किसी अच्छे भोजनालय में नहीं जाते?”

काव्या ने कहा—

“कभी-कभी जाते हैं। लेकिन यहाँ भी भोजन अच्छा मिलता है।”

युवराज मुस्कुराया।

“इसकी कीमत देखकर तो नहीं लगता कि यह इतना अच्छा होगा।”

आरव ने अपनी थाली से एक निवाला लेते हुए कहा—

“भोजन का आनंद उसके मूल्य से अधिक, साथ बैठने वाले लोगों पर निर्भर करता है।”

वीर ने तुरंत कहा—

“और यदि साथ में ईशा बैठी हो, तो अपने भोजन की सुरक्षा करना भी आवश्यक होता है।”

ईशा ने वीर की थाली से एक और निवाला उठा लिया।

सभी हँसने लगे।

युवराज भी उनके साथ हँसने लगा और उसने भोजन का आदेश दे दिया।

कुछ देर बाद उसने आरव की ओर देखकर कहा—

“सुबह जो कुछ हुआ, उसे भूल जाओ। आज मेरा पहला दिन है। मैं यहाँ किसी से शत्रुता करने नहीं आया हूँ।”

आरव ने सहजता से उत्तर दिया—

“मैं तो पहले ही भूल चुका हूँ।”

“तो तुम्हें मुझसे कोई शिकायत नहीं है?”

“यदि हर छोटी घटना को लेकर बैठ जाएँ, तो नए मित्र कैसे बनाएँगे?”

युवराज ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया।

फिर उसने काव्या की ओर देखा।

“तो क्या हम मित्र बन सकते हैं?”

उसने काव्या की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया।

काव्या ने बिना किसी संकोच के हँसते हुए उससे हाथ मिला लिया।

“बिल्कुल! लेकिन हमारी मित्रता में कोई बड़ा या छोटा नहीं होता। यहाँ सभी समान हैं।”

युवराज ने मुस्कुराते हुए कहा—

“मुझे स्वीकार है।”

वीर ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा—

“तो भाई, हमसे भी मित्रता कर लो। हम भी इसी समूह के सदस्य हैं।”

सभी हँसने लगे।

युवराज ने बारी-बारी से सभी से हाथ मिलाया।

लेकिन उसके मन में कुछ और ही चल रहा था।

सुबह जिस काव्या ने उसके पास बैठने के स्थान पर आरव के साथ जाना पसंद किया था, आज वही काव्या मुस्कुराते हुए उससे हाथ मिला रही थी।

युवराज को लगा कि उसने अपनी पहली सफलता प्राप्त कर ली है।

उसने मन ही मन सोचा—

“बस इतना ही तो करना था। धीरे-धीरे सब कुछ मेरे अनुसार होगा।”

उसके चेहरे पर एक आत्मविश्वास भरी मुस्कान लौट आई।

उसके भीतर का अहंकार एक बार फिर जाग उठा था।

वह काव्या के सहज और मित्रतापूर्ण व्यवहार को अपनी व्यक्तिगत सफलता समझ बैठा था।

चारों मित्रों के लिए यह एक नई मित्रता की शुरुआत थी।

लेकिन युवराज के लिए यह उसकी योजना का पहला सफल चरण था।

धन की सीमा

कॉलेज समाप्त होने के बाद सभी विद्यार्थी अपने-अपने घरों की ओर जाने लगे।

युवराज मुख्य भवन से निकलकर अपनी कार की ओर बढ़ रहा था।

तभी उसने काव्या को देखा।

“काव्या!”

काव्या ने पीछे मुड़कर देखा।

युवराज उसके पास पहुँचा और बोला—

“यदि तुम्हें घर जाना है, तो मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ।”

काव्या ने मुस्कुराकर उत्तर दिया—

“धन्यवाद, लेकिन मैं आरव के साथ जाऊँगी।”

“कोई बात नहीं, तुम दोनों को छोड़ दूँगा।”

“नहीं, वास्तव में हमें कुछ समय साथ बिताना है।”

तभी आरव वहाँ आ गया।

उसने युवराज से अगले दिन मिलने की बात कही और काव्या के साथ आगे बढ़ गया।

दोनों एक-दूसरे से बातें करते हुए हँस रहे थे।

युवराज वहीं खड़ा उन्हें देखता रहा।

उसने अपनी अत्यंत महँगी कार की ओर देखा और फिर आरव की ओर।

उसके मन में एक प्रश्न उठा।

आखिर उस साधारण युवक के पास ऐसा क्या था, जो उसके पास नहीं था?

बचपन से ही युवराज ने लगभग प्रत्येक इच्छित वस्तु प्राप्त की थी।

उसके लिए इच्छा और उसकी पूर्ति के बीच केवल कुछ समय का अंतर होता था।

लेकिन आज परिस्थिति अलग थी।

काव्या ने उससे मित्रता तो स्वीकार कर ली थी, लेकिन उसकी प्राथमिकता अभी भी आरव ही था।

युवराज को काव्या से मित्रता प्राप्त करने की प्रसन्नता थी, परंतु आरव का उसके जीवन में इतना महत्वपूर्ण स्थान होना उसे स्वीकार नहीं था।

वह कार में जाकर बैठ गया।

उसके चालक ने पूछा—

“घर चलें, छोटे साहब?”

युवराज ने खिड़की से बाहर आरव और काव्या को देखते हुए कहा—

“हाँ, चलो।”

कार आगे बढ़ने लगी।

युवराज के चेहरे पर धीरे-धीरे मुस्कान लौट आई।

उसने मन ही मन कहा—

“आज मित्रता हुई है, आरव। देखते हैं आगे क्या होता है।”

युवराज को अपनी योजना पर पूरा विश्वास था।

लेकिन वह एक बात नहीं समझ पाया था।

किसी के मित्रों के बीच स्थान प्राप्त करना और किसी के हृदय में स्थान प्राप्त करना, दोनों अलग-अलग बातें होती हैं।

और इस अंतर को समझने की युवराज की यात्रा अभी प्रारंभ हुई थी।

अध्याय 4 समाप्त।